



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
~~१०१५ माइक्रो~~

दिनांक
12.9.25

पृष्ठ संख्या
५

कॉलम
१-३

• एचएयू ने माई किसान एग्रो (एमकेडी सीडीस) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ किया समझौता।
एचएयू की सरसों की उन्नत किस्म से अब एमपी के किसान भी ले सकेंगे अधिक पैदावारी : वीसी

भारकर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) द्वारा विकसित उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। एचएयू ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीडीस) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है। वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि एचएयू के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही हैं। इससे खाद्य उत्पादन में बढ़ोतारी की जा सकती है। जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने तथा कम्पनी की तरफ से जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद मलिक, डॉ. रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणू मुजाल व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।



हिसार | एचएयू कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी।

आरएच 1975 और 725 किस्मों की विशेषताएं, तेल मात्रा करीब 39.5%

सरसों की आरएच 1975 किस्म 11 से 12 किवंटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन तथा 14 से 15 किवंटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल की मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। पैदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण यह किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है। आरएच 1975 किस्म हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बीजाई के लिए चिह्नित की गई है, इसलिए इन राज्यों के

किसानों को इस किस्म का लाभ मिलेगा। सरसों की आरएच-725 किस्म की फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी होती है व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है। दानों का आकार बड़ा और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किसानों में सबसे अधिक प्रचलित व लोकप्रिय किस्म है जो कि हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्य प्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
एनके जागरण

दिनांक
12-9-25

पृष्ठ संख्या
8

कॉलम
उ-४

हकूमि की सरसों की उन्नत किस्में किसानों की बढ़ाएंगी पैदावार

जागरण संवाददाता : हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की तरफ से विकसित किए गए उन्नत किस्मों के बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए मार्ई किसान एग्रो (एमकेडी सीडीस) नीमच (मध्यप्रदेश) के साथ समझौता किया है। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर ने व जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही है। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवाकर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ातरी

● हकूमि ने मार्ई किसान एग्रो (एमकेडी सीडीस) नीमच के साथ किया समझौता

आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज हकूमि उपलब्ध करवाएगी एमकेडी सीडीस को



कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी

की जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा। इस अवसर पर कुलसचिव डा. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डा. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. रमेश कुमार, डा. अनिल कुमार, डा. विनोद मिलिक, डा. राम अवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डा. योगेश जिंदल,

डा. रेणू मुंजाल व डा. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।

किस्मों की ये हैं विशेषताएं सरसों की आरएच 1975 किस्म : 11 से 12 विवेटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन तथा 14 से 15 विवेटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल की मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत

है। डा. राजबीर ने बताया कि पैदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है।

आरएच 1975 किस्म : हरियाणा पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राजस्थान में बीजाई के लिए चिह्नित की गई है, इन राज्यों के किसानों को इस किस्म का लाभ मिलेगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
अजीत सभा/ग्राम

दिनांक
12-9-25

पृष्ठ संख्या
५

कॉलम
१-३

हृषि की सरसों की उन्नत किस्में अब मध्यप्रदेश के किसानों की बढ़ाएगी पैदावार: प्रो. काम्बोज

हृषि ने माई किसान एग्रो (एमकेडी सीडीएस) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ किया समझौता

हिसार, 11 सितम्बर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों के उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीडीएस) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा

प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई सरसों की उन्नत किस्में आरएच 1975 और आरएच 725 का माई

चौधरी ने हस्ताक्षर किए। सरसों की आरएच-725 किस्म की फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है। साथ ही दानों का आकार भी बड़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किसानों में सबसे अधिक प्रचलित व लोकप्रिय किस्म है जो कि हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्यप्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद मलिक, डॉ. रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणू मुंजाल व डॉ. जितेन्द्र भट्टिया उपस्थित रहे।



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी।

लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही हैं। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देशभर में अपना परचम लहरा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवा कर

किसान एग्रो (एमकेडी सीडीएस) के साथ समझौता हुआ है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की और से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने तथा कंपनी की तरफ से जसवंत सिंह



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभ्यु उजाता	12. 9. 25	२	३०५

एचएयू ने मध्य प्रदेश की कंपनी से किया समझौता हकृति में विकसित सरसों की उन्नत किस्मों के बीज किसानों को दिए जाएंगे

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से विकसित की गई सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को भी उपलब्ध होंगी। एचएयू ने मध्यप्रदेश के नीमच की स्थित कंपनी माई किसान एग्रो (एमकेडी सीइस) के साथ समझौता किया है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा। वीसी की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की तरफ से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने और कंपनी की तरफ से जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए।

सरसों की आरएच 1975 किस्म 11 से 12 किवटल प्रति एकड़ औसत उत्पादन और आरएच-725 14 से 15 किवटल प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म



हस्ताक्षर युक्त समझौता पत्र दिखाते प्रो. बीआर कांबोज और कंपनी अधिकारी। शो : संस्थान

में तेल कि मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। आरएच 1975 किस्म हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बीजाई के लिए चिह्नित की गई है।

सरसों की आरएच-725 किस्म की फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी व उनमें दानों की संख्या भी अधिक होती है। साथ ही दानों का आकार भी बड़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किस्म हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली,

जम्मू उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्य प्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद मलिक, डॉ. रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणु मुंजाल व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
द्वारा भूमि

दिनांक
१२.९.२५

पृष्ठ संख्या
१

कॉलम
३४

हकूमि की उन्नत सरकों की किस्में अब मध्यप्रदेश के किसानों की बढ़ाएगी पैदावार: प्रो. काम्बोज

हकूमि ने माई किसान एग्रो नीमच, मध्यप्रदेश के साथ किया समझौता

हरिगौम न्यूज ॥१॥ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकासित की गई उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरकों की उन्नत किस्में आरएच-१९७५ व आरएच-७२५ का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सोइस) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है।

कुलपति प्रो. वीआर काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न कर्सों की उन्नत किस्में विकासित की जा रही हैं। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देशभर में अपना परचम लहरा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवा कर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोतारी की जा सकती है। इससे किसानों की अर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा।



हिसार। कुलपति प्रो. वीआर काम्बोज के साथ कंपनी के अधिकारी।

विश्वविद्यालय द्वारा विकासित की गई सरकों की उन्नत किस्में आरएच-१९७५ और आरएच-७२५ का माई किसान एग्रो (एमकेडी सोइस) के साथ समझौता हुआ है। कुलपति प्रो. वीआर काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुबंधान निदेशक डॉ. राजवीर गर्ग व तथा कंपनी की तरफ से जसवंत सिंह थौंधरी ने हस्ताक्षर किए। हस अवसर पर कुलपति डॉ. पवन कुमार, कृषि मणिविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद गिलिक, डॉ. रामअवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. रेणू गुजाल व डॉ. जितेन्द्र गाटिया उपस्थित रहे।

इन किस्मों की विशेषताएं

सरकों की आरएच-१९७५ किस्म ११ से १२ विक्रेताल प्रति एकड़ और उत्पादन तथा १४ से १५ किवटल प्रति एकड़ उत्पादन क्रमता रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल कि मात्रा लगभग ३९.५ प्रतिशत है। ऊहोंने बताया कि एदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण यह किस्म अव्यक्तिगत किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है। आरएच-१९७५ किस्म हरियाणा साइट पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राज्यों के सिवित होत्रों में लोजाइ के लिए विनिष्ठत की गई है, इसलिए इस राज्यों के किसानों को इस किस्म का लाभ मिलेगा। सरकों की आरएच-७२५ किस्म की फलियां अव्यक्तिगत की तुलना में लब्ध व उनमें दोनों की संख्या भी अधिक होती है। साथ ही दोनों का आकार भी बड़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किसानों में सबसे अधिक प्रशंसित व लोकप्रिय किस्म है जो कि हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू, उत्तर प्रदेश, दारजन्यान व मध्य प्रदेश में २० से २५ प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जाँड़। ४। जून	11.9.2025	--	--

■ हृषि ने माई किसान एग्रो (एमकेडी सीइस) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ किया समझौता हृषि की सरसों की उन्नत किस्में अब मध्यप्रदेश के किसानों की बढ़ाएंगी पैदावार

जगतांग न्यूज़

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीइस) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है।

कुलपति प्रो. चौ. आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही है। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देशभर में अपना परचम लहरा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवा कर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोतरी



को जा सकती है। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई सरसों की उन्नत किस्में आरएच 1975 और आरएच 725 का माई किसान एग्रो (एमकेडी सीइस) के साथ समझौता हुआ है। कुलपति प्रो. चौ. आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की और से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजवीर गर्ग ने तथा कम्पनी की तरफ से चम्पवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए।

सरसों की आरएच 1975 किस्म 11 से 12 किलोटन प्रति एकड़ औसत उत्पादन तथा 14 से 15 किलोटन प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता

रखने वाली किस्म है। इस किस्म में तेल कि मात्रा लगभग 39.5 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि पैदावार और तेल की मात्रा अधिक होने के कारण वह किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा किसानों में अधिक लोकप्रिय है। आरएच 1975 किस्म हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू व कशीर राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बीजाई के लिए चिन्हित की गई है, इसलिए इन राज्यों के किसानों को इस किस्म का लाभ मिलेगा। सरसों की आरएच-725 किस्म को फलियां अन्य किस्मों की तुलना में लंबी व ऊपर दानों की संख्या भी अधिक होती है। साथ ही दानों का आकार भी

बढ़ा होता है और तेल की मात्रा भी ज्यादा होती है। यह किसानों में सबसे अधिक प्रचलित व लोकप्रिय किस्म है जो कि हरियाणा के अलावा पंजाब, दिल्ली, जम्मू, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व मध्य प्रदेश में 20 से 25 प्रतिशत क्षेत्र में अकेली उगाई जाने वाली किस्म है। इस अवमर पर कुलसंचिव डॉ. पवन कुमार, कृषि मताविद्यालय के अधिकारी डॉ. एसके पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश कुमार, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. विनोद मलिक, डॉ. राम अवतार, आईपीआर सेल के प्रभारी डॉ. योगेश चिंदल, डॉ. रेण मुजाल व डॉ. जितेन्द्र भाटिया उपस्थित रहे।



**चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय**

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	11.9.2025	--	--

हकूमि ने माई किसान एग्रो नीमच के साथ समझौता पर किए साइन



सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई उन्नत किस्मों का बीज किसानों तक पहुंचाने के लिए निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ समझौते किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय ने सरसों की उन्नत किस्में आरएच-1975 व आरएच-725 का बीज मध्यप्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए माई किसान एग्रो (एमकेडी सीडीस) नीमच, मध्यप्रदेश के साथ समझौता किया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई सरसों की उन्नत किस्में आरएच 1975 और आरएच 725 का माई किसान एग्रो (एमकेडी सीडीस) के

साथ समझौता हुआ है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की उपस्थिति में विश्वविद्यालय की ओर से अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने तथा कम्पनी की तरफ से जसवंत सिंह चौधरी ने हस्ताक्षर किए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लगातार विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में विकसित की जा रही हैं। वैज्ञानिकों द्वारा ईजाद की गई उन्नत किस्में देशभर में अपना परचम लहरा रही हैं। किसानों को विश्वसनीय किस्मों का बीज एवं तकनीक उपलब्ध करवा कर प्रदेश एवं देश के खाद्य उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जा सकती है।